एशिया-प्रशांत देशों में जलवायु परविर्तन लचीलापन घाटा

प्रलिम्सि के लयि:

शुद्ध-शून्य उत्सर्जन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, वैश्वकि जलवायु संकट

मेन्स के लयि:

एशिया-प्रशांत क्षेत्र में कमज़ोर समूहों पर जलवायु-प्रेरति आपदाओं का प्रभाव, जलवायु परविर्तन से जुड़ी आर्थकि लागत

चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक अध्ययन रपोिर्ट **"द रेस टू नेट ज़ीरो: एक्सेलेरेटगि क्लाइमेट एक्शन इन एशिया एंड द पैसफिकि" में एशिया एवं प्रशांत के लयि संयुक्त राष्ट्र आर्थकि और सामाजकि आयोग (UNESCAP) ने खुलासा कयिा है कि एशिया एवं प्रशांत के अधकिांश देशों के पास चरम मौसमी घटनाओं तथा प्राकृतकि आपदाओं के कारण उत्पन्न बढ़ते खतरों का प्रबंधन** करने हेतु पर्याप्त संसाधन नहीं हैं।

- यह अध्ययन क्षेत्र में **अनुकूलन और शमन प्रयासों का समर्थन करने के लयि आवश्यक डेटा और संसाधनों की कमी** को दर्शाता है।

मुख्य बदिु

- **एशिया-प्रशांत में बढ़ती जलवायु चुनौतयिाँ:**
  - इस क्षेत्र में पछिले 60 वर्षों में **बढ़ते तापमान** ने **वैश्वकि औसत** को पार कर लयिा है, जसिसे **तीव्र चरम मौसम की घटनाएँ** एवं **प्राकृतकि खतरे** उत्पन्न हो गए हैं।
  - **उष्णकटबिंधीय चक्रवात**, **गरम हवाएँ**, **बाढ़** तथा **सूखे** के कारण जीवन की महत्त्वपूर्ण हान‍ि, वसि्थापन, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और गरीबी के स्तर में वृद्ध‍ि हुई है।
  - इस तरह की आपदाओं से सर्वाधकि प्रभावति शीर्ष 10 देशों में से **छह एशिया-प्रशांत क्षेत्र में स्थति हैं**, जसिसे खाद्य प्रणालयिों में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है, अर्थव्यवस्थाओं और समाजों को नुकसान हो रहा है।
- **कमज़ोर समूहों पर वषिम प्रभाव:**
  - जलवायु परविर्तन और जलवायु-प्रेरति आपदाएँ **महलिाओं, बच्चों, बुज़ुर्गों, वकिलांग व्यक्तयिों, प्रवासयिों, स्वदेशी आबादी तथा कमज़ोर स्थतियिों वाले युवा लोगों** सहति कमज़ोर समूहों पर गंभीर रूप से बोझ डालती हैं।
  - इन चुनौतयिों के कारण गरीबी और सामाजकि असमानता जैसे अंतर्नहिति कारकों के उभार में तेज़ी देखी जा रही है जो वकिास की प्रगति में बाधा बन रहे हैं।
- **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में क्षेत्रों का योगदान:**
  - एशिया-प्रशांत क्षेत्र **वशि्व के आधे से अधकि ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन** के लयि ज़मि्मेदार हैं।
    - यह क्षेत्र **तीव्र वकिास और वशिाल आबादी** के चलते **वैश्वकि जलवायु संकट** में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।
  - **इस क्षेत्र के भीतर** वभिनि्न **नचिले इलाके और कमज़ोर छोटे द्वीपीय देश स्थति** हैं, जो इसे जलवायु परविर्तन संबंधी जोखमिों के प्रति सुभेद्य बनाते हैं।
- **जलवायु परविर्तन की आर्थकि लागत:**
  - ESCAP का अनुमान है कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र में **प्राकृतकि और जैवकि खतरों से लगभग 780 बलियिन अमेरकिी डॉलर** का **वार्षकि औसत नुकसान हुआ** है।
    - **मध्यम जलवायु परविर्तन परदृिश्य** के अनुसार, इस नुकसान के **1.1 ट्रलियिन अमेरकिी डॉलर** से बढ़कर **सबसे खराब स्थति में 1.4 ट्रलियिन अमेरकिी डॉलर** तक पहुँचने का अनुमान है।
  - जलवायु कार्रवाई के लयि मौजूदा वत्तिपोषण इस **क्षेत्र की आवश्यकताओं को पूरा करने** और **ग्लोबल वार्मगि को 1.5 डगि्री सेल्सयिस** कम करने तक सीमति है।

आवश्यक पहल:

- **उत्सर्जन अंतराल को समाप्त करना:**
    - **ऊर्जा क्षेत्र:**
        - **राष्ट्रीय ऊर्जा प्रणालियों का पुनर्गठन और नवीकरणीय ऊर्जा अवसंरचना** में निवेश करना।
        - जीवाश्म ईंधन से **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में संक्रमण।**
        - नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाने हेतु **सीमा पार विद्युत ग्रिड को बढ़ावा देना।**
        - **स्थानीय समाधानों और विकेंद्रीकृत विद्युत उत्पादन पर ज़ोर देना।**
    - **परिवहन क्षेत्र:**
        - **निम्न-कार्बन वाले परिवहन मार्गों** में स्थानांतरण।
        - **एकीकृत भूमि उपयोग योजना** के माध्यम से परिवहन दूरी को कम करना।
        - **कम कार्बन या [शुद्ध-शून्य उत्सर्जन] वाले टिकाऊ परिवहन साधनों** को प्रोत्साहित करना।
        - **वाहन और ईंधन दक्षता** में सुधार।
    - **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश:**
        - क्षेत्रीय व्यापार समझौतों में **जलवायु संबंधी विचारों को एकीकृत करना।**
        - **जलवायु-स्मार्ट व्यापार प्रथाओं** को बढ़ावा देना।
        - निजी क्षेत्र को निम्न-कार्बन मार्गों और **धारणीयता प्रथाओं को अपनाने हेतु प्रोत्साहित करना।**
        - **स्थिरता रिपोर्टिंग और ग्रीनहाउस गैस लेखांकन** के माध्यम से **पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व** बढ़ाना।

UNESCAP:

- **परिचय: UNESCAP एशिया-प्रशांत क्षेत्र हेतु संयुक्त राष्ट्र की क्षेत्रीय विकास शाखा है।**
    - इसमें **भारत सहित एशिया-प्रशांत क्षेत्र के 53 सदस्य देश और 9 सहयोगी सदस्य** हैं।
- **स्थापना:** 1947
- **मुख्यालय:** बैंकॉक, थाईलैंड
- **उद्देश्य:** सदस्य देशों को परिणामोन्मुख परियोजनाएँ, तकनीकी सहायता और क्षमता निर्माण प्रदान करके इस क्षेत्र की कुछ सबसे बड़ी चुनौतियों पर नियंत्रण प्राप्त करना।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/climate-change-resilience-deficit-in-asia-pacific-countries